"चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 09 अगस्त 2017 को ग्राम पंचायत रिब्बा, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना "मूरंग वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता" के तहत **"चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान"** पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्राम पंचायत रिब्बा के लगभग 40 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया ।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि श्री

एंजेल चौहान, वन मंडल अधिकारी किन्नौर, श्री पारस राम, जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), श्री प्रेम प्रकाश नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, रिब्बा, वक्ताओं तथा किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन तथा स्वागत किया । अपने स्वागत संबोधन में वैज्ञानिक डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिकी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह अपनी स्वादिष्ट गिरी के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व में यह बहुत ही कम स्थानों पर पाया जाता है । यह किन्नौर के लोगों के आय के मुख्य स्त्रोत होने के साथ साथ उनके आहार एवं रीति -रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिले में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है । इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या से अधिकतर लोग

परिचित नही हैं जिससे न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वो दिन दूर नही जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जाएगे और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएँगे । उन्होंने यह भी बताया के वन कानून के तहत प्राकृतिक वन सरकारी संपत्ति होते हैं परन्तु किन्नौर के लोगों को चिलगोजा बीज एकत्रित करने के अधिकार हैं इसलिए इस तरह के विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्यधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएं भी प्राप्त होती रहेंगी ।

श्री पारस राम, जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), किन्नौर ने अपने संबोधन में कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है व कहीं न कहीं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है । इस कड़ी में बैंक द्वारा वित्त पोषित परियोजना “चिलगोजा” के अंतर्गत आज इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है तथा भविष्य में बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा ।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री प्रेम प्रकाश नेगी, प्रधान, रिब्बा ने संस्थान के प्रयास की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

मुख्य अतिथि श्री एंजेल चौहान, वन मंडल अधिकारी, किन्नौर ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का

शुभारम्भ कर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा किन्नौर क्षेत्र में पाया जाने वाला एक बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है तथा यहाँ के निवासियों की आर्थिकी तथा पर्यावरण संतुलन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है । उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक को इस महत्वपूर्ण विषय पर जिला किन्नौर के किसानों तथा बागवानों को प्रशिक्षण देने तथा जागरूक करने के लिए धन्यवाद किया । उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे ।

तकनीकी सत्र के दौरान चिलगोजा संरक्षण से संबंधित विभिन्न विषयों पर किसानों एवं

बागवानों को विस्तार से जानकारी दी गई । डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों तथा बागवानों को 'चिलगोजा संरक्षण में चिलगोजा शंकुओं के सतत् तुड़ान की आवश्यकता' से अवगत करवाया तथा चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने

के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उचित उपकरण (मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर) के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया ।

सामाजिक कार्यकर्ता, कुमारी रतन मंजरी नेगी ने 'चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व' के बारे में लोगों को बताया । उन्होंने यह भी कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें ।

श्री नीमा छेरिंग नेगी, वन खंड अधिकारी, मूरंग वन परिक्षेत्र ने 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएं वन अधिकारियों के समक्ष रखीं एवं वन अधिकारियों ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग का आशवासन दिया ।

श्री अशवनी कुमार, अनुसंधान सहायक, ग्रेड-1, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को कैसे तोड़ा जाये' के बारे में लोगों को चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर क्षेत्र प्रदर्शन किया । इसी दौरान पांच मल्टी एंगुलेर लॉन्ग रीच प्रुनर भी पंचायत प्रधान को मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किये गए ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री एंजेल चौहान, वन मंडल अधिकारी किन्नौर, श्री पारस राम, जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), श्री प्रेम प्रकाश नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, रिब्बा, वक्ताओं तथा किसानों एवं बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला का भी धन्यवाद किया ।

NABARD
चिलगोज़ा के शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान
पर
एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांकः 9 अगस्त 2017
स्थानः ग्राम रिब्बा (किन्नौर, हि.प्र.)
आयोजकः हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला
सौजन्य : राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला